॥ ॐ ॥

बृहदारण्यकोपनिषद्

(सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ-संख्या
१- शान्तिपाठ	....	२७

प्रथम अध्याय

प्रथम ब्राह्मण		
२- सम्बन्ध-भाष्य	....	२८
३- अश्वके अवयवोंमें कालादि-दृष्टि	....	३७
४- अश्वमेधसम्बन्धी महिमासंज्ञक ग्रहादिमें अहरादिदृष्टि	.....	४३
द्वितीय ब्राह्मण		
५- अश्वमेधसम्बन्धी अग्निकी उत्पत्ति	....	४६
६- जलसे विराट्-रूप अग्निकी उत्पत्ति	....	६५
७- विराट्-रूप अग्निके अवयवोंमें प्राचीदिगादि-दृष्टि	.....	६७
८- संवत्सर और वाक्‌की उत्पत्ति	....	७०
९- ऋगादिकी उत्पत्ति और मृत्युके अन्नत्वका उपन्यास	.....	७३
१०- प्रजापतिकी यज्ञकामना और उसके प्राण एवं वीर्यका निष्क्रमण	.....	७६
११- अश्वमेधोपासना और उसका फल	....	७८
तृतीय ब्राह्मण		
१२- देव और असुरोंकी स्पर्धा, देवताओंका उद्‌गीथ-सम्बन्धी विचार	....	८६
१३- वाक्‌का उद्‌गान और उसका पापविद्ध होना	... .	१०५
१४- प्राण, चक्षु, श्रोत्र और मनका उद्‌गान तथा उनका पापविद्ध होना	..	१०९
१५- मुख्य प्राणका उद्‌गान, उसका पापविद्ध न होना तथा उसकी उपासनाका फल	....	११३
१६- मुख्य प्राणका आङ्गिरसत्व	....	११७
१७- प्राणकी शुद्धताका प्रतिपादन	....	११९
१८- प्राणोपासकसे मृत्यु दूर रहता है—इसकी उपपत्ति	.....	१२२
१९- प्राणद्वारा वागादिका अग्न्यादि देवभावको प्राप्त कराया जाना	.....	१२५
२०- प्राणका अन्नाद्यागान	....	१२९
२१- प्राणका सर्वपोषकत्व और उसकी इस प्रकारकी उपासनाका फल	..	१३१
२२- प्राणके आङ्गिरसत्वकी उपपत्ति	....	१३६

विषय		पृष्ठ-संख्या
२३- प्राणके बृहस्पतित्वकी उपपत्ति	....	१३८
२४- प्राणके ब्रह्मणस्पतित्वकी उपपत्ति	....	१४०
२५- प्राणके सामत्वकी उपपत्ति	....	१४२
२६- प्राणके उद्‌गीथत्वकी उपपत्ति	....	१४५
२७- उक्त अर्थकी पुष्टिके लिये आख्यायिका	....	१४६
२८- सामके स्वभूत स्वरको सम्पादन करनेकी आवश्यकता	.....	१४८
२९- सामके सुवर्णको जाननेका फल	....	१५०
३०- सामके प्रतिष्ठागुणको जाननेवालेका फल	....	१५१
३१- प्राणोपासकके लिये जपका विधान	....	१५३
चतुर्थ ब्राह्मण		
३२- ग्रन्थ-सम्बन्ध	....	१६१
३३- प्रजापतिके अहंनामा होनेका कारण और उसकी इस प्रकार उपासना करनेका फल	....	१६२
३४- प्रजापतिका भय और विचारद्वारा उसकी निवृत्ति	.....	१६६
३५- प्रजापतिसे मिथुनकी उत्पत्ति	....	१७३
३६- मिथुनके द्वारा गवादि प्रपञ्चकी सृष्टि	....	१७६
३७- प्रजापतिकी सृष्टिसंज्ञा और सृष्टिरूपसे उसकी उपासना करनेका फल		१७८
३८- प्रजापतिकी अग्न्यादिदेवरूप अतिसृष्टि	....	१७९
३९- अव्याकृत कारण ब्रह्मसे व्यक्त जगत्‌की उत्पत्ति, दोनोंका अभेद और इस अभेदोपासनाका फल	....	१८८
४०- निरतिशय प्रियरूपसे आत्माकी उपासना	....	२३४
४१- ब्रह्मके सर्वरूप होनेके विषयमें प्रश्न	....	२३७
४२- ब्रह्मने क्या जाना?—इसका उत्तर और उस प्रकार जाननेका फल	..	२४१
४३- क्षत्रियसर्ग तथा ब्राह्मणजातिके साथ उसके सम्बन्धका वर्णन	.....	२८४
४४- वैश्यजातिकी उत्पत्ति	....	२८८
४५- शूद्रवर्णकी उत्पत्ति	....	२८९
४६- धर्मकी उत्पत्ति और उसके प्रभाव एवं स्वरूपका वर्णन	.....	२९०
४७- आत्मोपासनकी आवश्यकता	....	२९२
४८- कर्माधिकारी जीव किन-किन कर्मोंके कारण समस्त प्राणियोंका लोक है?	....	३०३
४९- प्रवृत्तिके बीजभूत काम और पाङ्क्तकर्मका वर्णन	.....	३०९

विषय	पृष्ठ-संख्या
पञ्चम ब्राह्मण	
५०- सप्तान्नसृष्टि, उसका विभाग और व्याख्या	३१७
५१- आत्माके लिये तीन अन्न और उनका आध्यात्मिक विवेचन	३४०
५२- आत्मार्थ अन्नोंका आधिभौतिक विस्तार	३४६
५३-आत्मार्थ अन्नोंका आधिदैविक विस्तार	३५०
५४- इन्द्ररूप प्राणकी उत्पत्ति और उसकी उपासनाका फल	३५१
५५- आत्मार्थ अन्नोंकी अन्तवान् और अनन्तरूपसे उपासना करनेका फल	३५३
५६- तीन अन्नरूप प्रजापतिका षोडशकल संवत्सररूपसे निर्देश	३५५
५७- अन्नोपासक ही षोडशकल संवत्सर प्रजापति है	३६०
५८- लोकत्रयकी प्राप्तिके साधन तथा देवलोककी उत्कृष्टताका वर्णन	३६२
५९- सम्प्रत्तिकर्म और उसका परिणाम	३६४
६०- सम्प्रत्तिकर्मकर्तामें वागादि प्राणोंके आवेशका प्रकार	३७२
६१- व्रतमीमांसा—अध्यात्मप्राणदर्शन	३७९
६२- अधिदैवदर्शन	३८४
६३- प्राणव्रतकी स्तुतिमें मन्त्र	३८६
षष्ठ ब्राह्मण	
६४- पूर्वोक्त अविद्याकार्यका उपसंहार—नामसामान्यभूता वाक्	३९०
६५- रूपसामान्य चक्षुका वर्णन	३९३
६६- कर्मसामान्य आत्मामें सबका अन्तर्भाव दिखाना	३९४
द्वितीय अध्याय	
प्रथम ब्राह्मण	
६७- उपक्रम	३९८
६८- ब्रह्मविद्याका उपदेश करनेके लिये अपने पास आये हुए गार्ग्यको अजातशत्रुका सहस्र गौ दान करना	४०२
६९- गार्ग्यद्वारा आदित्यका ब्रह्मरूपसे प्रतिपादन तथा अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४०४
७०- गार्ग्यद्वारा चन्द्रान्तर्गत ब्रह्मका प्रतिपादन तथा अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४०६
७१- गार्ग्यद्वारा विद्युदभिमानी पुरुषका ब्रह्मरूपसे उपदेश तथा अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४०८

विषय	पृष्ठ-संख्या
७२- गार्ग्यद्वारा आकाश-ब्रह्मका उपदेश और अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४०९
७३- गार्ग्यद्वारा वायु-ब्रह्मका प्रतिपादन तथा अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१०
७४- गार्ग्यद्वारा अग्नि-ब्रह्मका प्रतिपादन तथा अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४११
७५- गार्ग्यद्वारा जलान्तर्गत ब्रह्मका प्रतिपादन तथा अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१२
७६- गार्ग्यद्वारा आदर्शान्तर्गत ब्रह्मका प्रतिपादन और अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१२
७७- गार्ग्यद्वारा प्राण-ब्रह्मका प्रतिपादन और अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१३
७८- गार्ग्यद्वारा दिग्ब्रह्मका प्रतिपादन और अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१४
७९- गार्ग्यद्वारा छाया ब्रह्मका प्रतिपादन और अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१५
८०- गार्ग्यद्वारा देहान्तर्गत ब्रह्मका प्रतिपादन और अजातशत्रुद्वारा उसका प्रत्याख्यान	४१६
८१- गार्ग्यका पराभव और अजातशत्रुके प्रति उसकी उपसत्ति	४१७
८२- गार्ग्यका हाथ पकड़कर अजातशत्रुका एक सोये हुए पुरुषके पास जाना और प्राणोंके नामसे न उठनेपर उसे हाथ दबाकर जगाना	४१९
८३- सुषुप्तिमें विज्ञानमयकी स्थितिके विषयमें अजातशत्रुका प्रश्न	४३४
८४- विज्ञानात्माके शयनस्थानका प्रतिपादन तथा स्वपितिशब्दका निर्वचन	४३७
८५- स्वप्नवृत्तिका स्वरूप	४४०
८६- सुषुप्तिका स्वरूप	४४६
८७- आत्मासे जगत्की उत्पत्तिमें ऊर्णनाभि और अग्नि-विस्फुलिङ्गका दृष्टान्त	५५५
द्वितीय ब्राह्मण	
८८- शिशुसंज्ञक मध्यम प्राणका उसके उपकरणोंसहित वर्णन	५००
८९- मध्यम प्राणरूप शिशुके नेत्रान्तर्गत सात अक्षितियाँ	५०४
९०- श्रोत्रादि प्राणोंके सहित सिरमें चमस-दृष्टिका विधान	५०६
९१- श्रोत्रादिमें विभागपूर्वक सप्तर्षि-दृष्टि	५०८

विषय	पृष्ठ-संख्या
तृतीय ब्राह्मण	
९२-ब्रह्मके दो रूप	५११
९३-मूर्तामूर्तके विभागपूर्वक मूर्तरूप और उसके रसका वर्णन	५१३
९४-विशेषणोंसहित अमूर्तरूप और उसके रसका वर्णन	५१५
९५-अध्यात्म मूर्तामूर्तके विभागपूर्वक मूर्तका वर्णन	५१९
९६-अध्यात्म अमूर्तका उसके विशेषणोंसहित वर्णन	५२१
९७-इन्द्रियात्मा पुरुषके स्वरूपका वर्णन	५२२
चतुर्थ ब्राह्मण	
९८-याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी-संवाद	५३६
९९-मैत्रेयीका अमृतत्वसाधनविषयक प्रश्न	५४४
१००-याज्ञवल्क्यजीका आश्वासन	५४५
१०१-प्रियतम आत्माके लिये ही अन्य वस्तुएँ प्रिय होती हैं	५४६
१०२-आत्मा सबसे अभिन्न है, इसका प्रतिपादन	५५०
१०३-सबकी आत्मस्वरूपताके ग्रहणमें दुन्दुभि, शङ्ख और वीणाका दृष्टान्त	५५१
१०४-परमात्माके निःश्वासभूत ऋग्वेदादिका उनसे अभिन्नत्वप्रतिपादन....	५५५
१०५-आत्मा ही सबका आश्रय है—इसमें दृष्टान्त	५५९
१०६-विवेकद्वारा देहादिके विज्ञानघनस्वरूप होनेमें जलमें डाले हुए लवणखण्डका दृष्टान्त	५६३
१०७-मैत्रेयीकी शङ्का और याज्ञवल्क्यका समाधान..	५७०
१०८-व्यवहार द्वैतमें है, परमार्थ व्यवहारातीत है....	५७२
पञ्चम ब्राह्मण	
१०९-पृथ्वी आदिमें मधुदृष्टि तथा उनके अन्तर्वर्ती पुरुषके साथ शारीर-पुरुषकी अभिन्नता	५८०
११०-आत्माका सर्वाधिपतित्व और सर्वाश्रयत्वनिरूपण	५९३
१११-दध्यङ्ङाथर्वणद्वारा अश्विनीकुमारोंको मधुविद्याके उपदेशकी आख्यायिका	५९८
षष्ठ ब्राह्मण	
११२-मधुविद्याकी सम्प्रदायपरम्परा	६१३
तृतीय अध्याय	
प्रथम ब्राह्मण	
११३-याज्ञवल्कीय काण्ड	६१७

विषय	पृष्ठ-संख्या
११४-राजा जनकका सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ताको सहस्र गौएँ दान करनेकी घोषणा करना	६१८
११५-याज्ञवल्क्यका गौएँ ले जानेके लिये अपने शिष्यको आज्ञा देना, ब्राह्मणोंका कोप, अश्वलका प्रश्न	६२०
११६-मृत्युग्रस्त कर्मसाधनोंकी आसक्तिसे पार पानेका उपाय	६२३
११७-अहोरात्रादिरूप कालसे अतिमुक्तिका साधन...	६२७
११८-तिथ्यादिरूप कालरूपसे अतिमुक्तिका साधन..	६२९
११९-परिच्छेदके विषयभूत मृत्युको पार करनेके आश्रयका वर्णन.....	६३१
१२०-शस्त्रसम्बन्धी ऋचाएँ और उनसे प्राप्त होनेवाला फल	६३५
१२१-होम-सम्बन्धिनी आहुतियाँ और उनसे प्राप्त होनेवाले फल	६३६
१२२-ब्रह्माके यज्ञरक्षाके साधन और उससे प्राप्त होनेवाले फलका वर्णन	६३९
१२३-स्तवनसम्बन्धिनी ऋचाओंका और उनसे प्राप्त होनेवाले फलका वर्णन	६४२
द्वितीय ब्राह्मण	
१२४-याज्ञवल्क्य-आर्तभाग-संवाद	६४५
१२५-ग्रह और अतिग्रहकी संख्या एवं स्वरूप.....	६५०
१२६-घ्राणादि इन्द्रियोंका ग्रहत्व और गन्धादि विषयोंका अतिग्रहत्वनिरूपण	६५३
१२७-सर्वभक्षक मृत्यु किसका खाद्य है?	६५६
१२८-तत्त्वज्ञके देहावसानका क्रम	६५८
१२९-इन्द्रियाभिमानी देवताओंके निवृत्त हो जानेपर अस्वतन्त्र कर्ता पुरुषकी स्थितिका विचार	६६१
तृतीय ब्राह्मण	
१३०-याज्ञवल्क्य-भुज्यु-संवाद	६६९
१३१-पारिक्षित कहाँ रहे?	६८८
१३२-पारिक्षितोंकी गतिका वर्णन	६९२
चतुर्थ ब्राह्मण	
१३३-याज्ञवल्क्य-उषस्त-संवाद	६९६
१३४-सर्वान्तर आत्माका निरूपण	६९६
१३५-आत्माकी अनिर्वचनीयता	७००
पञ्चम ब्राह्मण	
१३६-याज्ञवल्क्य-कहोल-संवाद	७०७
१३७-संन्याससहित आत्मज्ञानका निरूपण	७०७

विषय			पृष्ठ-संख्या
षष्ठ ब्राह्मण			
१३८-याज्ञवल्क्य-गार्गी-संवाद	.....	.....	७३३
१३९-जलसे लेकर ब्रह्मलोकपर्यन्त उत्तरोत्तर अधिष्ठान तत्त्वोंका निरूपण			७३४
सप्तम ब्राह्मण			
१४०-याज्ञवल्क्य-आरुणि-संवाद	.....	.....	७३९
१४१-सूत्र और अन्तर्यामीके विषयमें प्रश्न	.....	.....	७३९
१४२-सूत्रका निरूपण	.....	.....	७४४
१४३-अन्तर्यामीका निरूपण	.....	.....	७४७
अष्टम ब्राह्मण			
१४४-दो प्रश्न पूछनेके लिये गार्गीका आज्ञा माँगना		.....	७५६
१४५-पहला प्रश्न	.....	.....	७५९
१४६-याज्ञवल्क्यका उत्तर	.....	.....	७६०
१४७-उपक्रमसहित दूसरा प्रश्न	.....	.....	७६२
१४८-याज्ञवल्क्यका उत्तर	.....	.....	७६३
१४९-अनुमानप्रमाणद्वारा अक्षरका निरूपण	.....	.....	७६७
१५०-अक्षरके ज्ञान और अज्ञानके परिणाम	.....	.....	७७४
१५१-अक्षरका स्वरूप, लक्षण और अद्वितीयत्व	.....	.....	७७६
१५२-गार्गीका निर्णय	.....	.....	७७८
नवम ब्राह्मण			
१५३-याज्ञवल्क्य-शाकल्य-संवाद	.....	.....	७८२
१५४-देवताओंकी संख्या	.....	.....	७८३
१५५-तैंतीस देवताओंका विवरण	.....	.....	७८५
१५६-वसु कौन हैं?	.....	.....	७८६
१५७-रुद्र कौन हैं?	.....	.....	७८७
१५८-आदित्य कौन हैं?	.....	.....	७८८
१५९-इन्द्र और प्रजापति कौन हैं?	.....	.....	७८८
१६०-छः देवताओंका विवरण	.....	.....	७८९
१६१-देवताओंकी तीन, दो और डेढ़ संख्याओंका विवरण		.....	७९०
१६२-डेढ़ और एक देवका विवरण	.....	.....	७९१
१६३-प्राणब्रह्मके आठ प्रकारके भेद	.....	.....	७९२
१६४-शाकल्यकी चेतावनी	.....	.....	८०२

विषय			पृष्ठ-संख्या
१६५-देवता और प्रतिष्ठासहित दिशाओंके ज्ञानकी प्रतिज्ञा	.....		८०३
१६६-देवता और प्रतिष्ठासहित पूर्वदिशाका वर्णन ...	.....		८०४
१६७-देवता और प्रतिष्ठाके सहित दक्षिण दिशाका वर्णन	.....		८०७
१६८-देवता और प्रतिष्ठाके सहित पश्चिम दिशाका वर्णन	.....		८०९
१६९-देवता और प्रतिष्ठाके सहित उत्तर दिशाका वर्णन	.....		८११
१७०-देवता और प्रतिष्ठाके सहित ध्रुवा दिशाका वर्णन	.....		८१३
१७१-हृदय और शरीरका अन्योन्याश्रयत्व	.....	.....	८१४
१७२-समानपर्यन्त शरीरादिकी प्रतिष्ठा तथा आत्मस्वरूपका वर्णन और शाकल्यका शिरःपतन	.....	.....	८१५
१७३-याज्ञवल्क्यका सभासदोंको प्रश्न करनेके लिये आमन्त्रण	.....	.....	८२१
१७४-याज्ञवल्क्यके प्रश्न	.....	.....	८२२
चतुर्थ अध्याय			
प्रथम ब्राह्मण			
१७५-जनक-याज्ञवल्क्य-संवाद	.....	.....	८३८
१७६-जनककी सभामें याज्ञवल्क्यका आगमन, जनकका प्रश्न	.....		८३९
१७७-शैलिनिके बतलाये हुए वाक्‌ब्रह्मकी उपासनाका फलसहित वर्णन..			८४०
१७८-उदङ्कोक्त प्राण-ब्रह्मकी उपासनाका फलसहित वर्णन	.....		८४५
१७९-बर्कुके बताये हुए चक्षुर्ब्रह्मकी उपासनाका फलसहित वर्णन.....			८४७
१८०-गर्दभीविपीतके कहे हुए श्रोत्रब्रह्मकी उपासनाका फलसहित वर्णन.			८४९
१८१-जाबालोक्त मनोब्रह्मकी उपासनाका फलसहित वर्णन	.....		८५१
१८२-शाकल्योक्त हृदयब्रह्मकी उपासनाका फलसहित वर्णन	.....		८५३
द्वितीय ब्राह्मण			
१८३-जनककी उपसत्ति	.....	.....	८५५
१८४-दक्षिणनेत्रस्थ इन्द्रसंज्ञक पुरुषका परिचय.....		.....	८५८
१८५-वामनेत्रस्थ इन्द्रपत्नी तथा विराट्‌का परिचय और उन दोनोंके संस्ताव, अन्न, प्रावरण एवं मार्गादिका वर्णन	.....	.....	८५९
१८६-प्राणात्मभूत विद्वान्‌की सर्वात्मकताका वर्णन, जनककी अभयप्राप्ति और याज्ञवल्क्यके प्रति आत्मसमर्पण	.....	.....	८६२
तृतीय ब्राह्मण			
१८७-जनकके पास याज्ञवल्क्यका आना और राजाका पहले प्राप्त किये हुए इच्छानुसार प्रश्नरूप वरके कारण उनसे प्रश्न करना	.....		८६८

विषय	पृष्ठ-संख्या
१८८-पुरुषके व्यवहारमें उपयोगी पाँच ज्योतियाँ	
१-आदित्यज्योति	८६९
२-चन्द्रज्योति	८७३
३-अग्निज्योति	८७३
४-वाग्ज्योति	८७४
५-आत्मज्योति	८७६
१८९-आत्माका स्वरूप	८८९
१९०-आत्मा जन्म और मरणके साथ देहेन्द्रियरूप पापको ग्रहण और त्याग करता है	९१९
१९१-आत्माके दो स्थानोंका वर्णन	९२१
१९२-स्वप्नावस्थामें रथादिका अभाव है, इसलिये उस समय आत्मा स्वयं ज्योति है	९२८
१९३-स्वप्नसृष्टिके विषयमें प्रमाणभूत मन्त्र	९३३
१९४-स्वप्नस्थानके विषयमें मतभेद और उसके स्वयंज्योतिष्ट्वका निश्चय	९३६
१९५-सुषुप्तिके भोगसे आत्माकी असङ्गता	९४२
१९६-स्वप्नावस्थाके भोगोंसे आत्माकी असङ्गता.....	९४८
१९७-जागरित-अवस्थाके भोगोंसे आत्माकी असङ्गता	९५०
१९८-पुरुषके अवस्थान्तर-सञ्चारमें महामत्स्यका दृष्टान्त	९५४
१९९-सुषुप्ति आत्माका विश्रान्तिस्थान है, इसमें श्येनका दृष्टान्त	९५७
२००-स्वप्नदर्शनकी स्थानभूता हितानाम्नी नाडियोंका वर्णन	९५९
२०१-मोक्षका स्वरूप प्रदर्शित करनेमें स्त्रीसे मिले हुए पुरुषका दृष्टान्त..	९६६
२०२-सुषुप्तिस्थ आत्माकी निःसङ्ग और निःशोक स्थितिका वर्णन.....	९७२
२०३-सुषुप्तिमें स्वयंज्योति आत्माकी दृष्टि आदिका अनुभव न होनेमें हेतु	९८३
२०४-जागरित और स्वप्नमें पुरुषको विशेष ज्ञान होनेमें हेतु	९९७
२०५-सुषुप्तिगत आत्माकी अभिन्न स्थिति	९९८
२०६-निष्पाप और निष्काम श्रोत्रियके सार्वभौम आनन्दका दिग्दर्शन.....	१००२
२०७-सम्बन्ध-भाष्य	१००९
२०८-आत्माकी संसाररूप जागरित-स्थानमें पुनरावृत्ति	१०११
२०९-मुमुर्षुकी दशाका वर्णन	१०१२
२१०-ऊर्ध्वोच्छ्वास क्यों और किसलिये होता है?.	१०१४
२११-देहान्तरग्रहणका प्रकार	१०१८

विषय	पृष्ठ-संख्या
२१२-प्राणोंके देहान्तरगमनका प्रकार	१०२०
चतुर्थ ब्राह्मण	
२१३-मरणोन्मुख जीवकी दशाका वर्णन	१०२२
२१४-लिङ्गात्मामें विभिन्न इन्द्रियोंके लय और उसके उत्क्रमणका वर्णन	१०२६
२१५-देहान्तरगमनमें जोंकका दृष्टान्त	१०३५
२१६-आत्माके देहान्तरनिर्माणमें सुवर्णकारका दृष्टान्त	१०३७
२१७-सर्वमय आत्माकी कर्मानुसार विभिन्न गतियोंका निरूपण	१०३९
२१८-कामनाके अनुसार शुभाशुभ गति तथा निष्काम ब्रह्मज्ञके मोक्षका निरूपण	१०४६
२१९-विद्वान्का अनुत्क्रमण	१०६३
२२०-आत्मकामी ब्रह्मवेत्ताको मोक्ष प्राप्त होता है—इसमें प्रमाणभूत मन्त्र	१०६८
२२१-मोक्षमार्गके विषयमें मतभेद	१०७१
२२२-विद्या और अविद्यारत पुरुषोंकी गति	१०७५
२२३-अज्ञानियोंको प्राप्त होनेवाले अनन्द लोकोंका वर्णन	१०७६
२२४-आत्मज्ञकी निश्चिन्त स्थिति	१०७६
२२५-आत्मज्ञका महत्त्व	१०७८
२२६-आत्मज्ञानके बिना होनेवाली दुर्गति	१०८०
२२७-अभेददर्शी आत्मज्ञकी निर्भयता	१०८२
२२८-देवोंद्वारा उपास्य आयुसंज्ञक ब्रह्म	१०८३
२२९-सर्वाधारभूत ब्रह्मको जाननेवाला मैं अमृत ही हूँ	१०८४
२३०-ब्रह्मको प्राणका प्राणादि जाननेवाले ही उसे जानते हैं	१०८५
२३१-नानात्वदर्शीकी दुर्गतिका वर्णन	१०८६
२३२-ब्रह्मदर्शनकी विधि	१०८६
२३३-ब्रह्मनिष्ठामें अधिक शास्त्राभ्यास बाधक है.....	१०८९
२३४-आत्माके स्वरूप, उसकी उपलब्धिके साधनभूत संन्यास और आत्मज्ञकी स्थितिका प्रतिपादन	१०९०
२३५-ब्रह्मवेत्ताकी स्थिति और याज्ञवल्क्यके प्रति जनकका आत्मसमर्पण	१११५
२३६-आत्मा अन्नाद और वसुदान है—इस प्रकारकी उपासनाका फल ...	११२०
२३७-ब्रह्मके स्वरूप और ब्रह्मज्ञकी स्थितिका वर्णन	११२१
पञ्चम ब्राह्मण	
२३८-याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी-संवाद	११२५

विषय	पृष्ठ-संख्या
२३९-याज्ञवल्क्य और उनकी दो स्त्रियाँ	११२६
२४०-याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी-संवाद	११२७
२४१-मैत्रेयीका अमृतत्वसाधनविषयक प्रश्न	११२८
२४२-याज्ञवल्क्यजीका सान्त्वनापूर्वक समाधान.....	११२९
२४३-प्रियतम आत्माके लिये ही सब वस्तुएँ प्रिय होती हैं	११३०
२४४-भेददृष्टिसे हानि दिखाकर 'सब कुछ आत्मा ही है' इस तत्त्वका उपदेश	११३२
२४५-सबको 'आत्मा' रूपसे ग्रहण करनेमें दृष्टान्त.	११३३
२४६-निर्विशेष आत्माके विषयमें मैत्रेयीकी शङ्का और याज्ञवल्क्यका समाधान	११३६
२४७-उपदेशका उपसंहार और याज्ञवल्क्यका संन्यास	११३८
षष्ठ ब्राह्मण	
२४८-याज्ञवल्कीय काण्डकी वंश-परम्परा	११५६
पञ्चम अध्याय	
प्रथम ब्राह्मण	
२४९-पूर्णब्रह्म और उससे उत्पन्न होनेवाला पूर्ण कार्य	११६०
२५०-ॐ खं ब्रह्म और उसकी उपासनाका वर्णन..	११७३
द्वितीय ब्राह्मण	
२५१-प्रजापतिका देव, मनुष्य और असुर तीनोंको एक ही अक्षर 'द' से पृथक्-पृथक् दम, दान और दयाका उपदेश	११७८
तृतीय ब्राह्मण	
२५२-हृदय-ब्रह्मकी उपासना	११८६
चतुर्थ ब्राह्मण	
२५३-सत्य-ब्रह्मकी उपासना	११८९
पञ्चम ब्राह्मण	
२५४-प्रथमज सत्य-ब्रह्म और 'सत्य' नामके अक्षरोंकी उपासना	११९२
२५५-एक-दूसरेमें प्रतिष्ठित सत्यसंज्ञक आदित्यमण्डलस्थ और चाक्षुष पुरुष	११९५
२५६-अहःसंज्ञक आदित्यमण्डलस्थ पुरुषके व्याहृतिरूप अवयव	११९८
२५७-अहंसंज्ञक चाक्षुष पुरुषके व्याहृतिरूप अवयव	११९९

विषय	पृष्ठ-संख्या
षष्ठ ब्राह्मण	
२५८-हृदयस्थ मनोमय पुरुषकी उपासना	१२००
सप्तम ब्राह्मण	
२५९-विद्युद्ब्रह्मकी उपासना	१२०२
अष्टम ब्राह्मण	
२६०-धेनुरूपसे वाक्‌की उपासना	१२०३
नवम ब्राह्मण	
२६१-पुरुषान्तर्गत वैश्वानराग्नि, उसका घोष और मरणकालका सूचक अरिष्ट	१२०५
दशम ब्राह्मण	
२६२-प्रकरणान्तर्गत उपासनाओंसे प्राप्त होनेवाली गति	१२०७
एकादश ब्राह्मण	
२६३-व्याधि, श्मशानगमन और अग्निदाहमें परम तपोदृष्टिका विधान	१२०९
द्वादश ब्राह्मण	
२६४-अन्न-प्राणरूप ब्रह्मकी उपासना और तद्विषयक आख्यान	१२११
त्रयोदश ब्राह्मण	
२६५-उक्थदृष्टिसे प्राणोपासना	१२१६
२६६-यजुर्दृष्टिसे प्राणोपासना	१२१७
२६७-सामदृष्टिसे प्राणोपासना	१२१८
२६८-क्षत्रदृष्टिसे प्राणोपासना	१२१९
चतुर्दश ब्राह्मण	
२६९-गायत्र्युपासना	१२२०
२७०-गायत्रीके प्रथम लोकरूप-पादकी उपासना	१२२१
२७१-गायत्रीके द्वितीय त्रयीरूप-पादकी उपासना	१२२२
२७२-गायत्रीके तृतीय प्राणादिपाद और तुरीय दर्शत परोरजापादकी उपासना	१२२३
२७३-गायत्रीकी परमप्रतिष्ठा प्राण हैं, 'गायत्री' शब्दका निर्वचन और वटुको किये गये गायत्र्युपदेशका फल	१२२६
२७४-अनुष्टुप् सावित्रीके उपदेशका निषेध और गायत्री सावित्रीका महत्त्व	१२३०
२७५-गायत्रीके प्रत्येक पदके महत्त्वका दिग्दर्शन....	१२३२
२७६-गायत्रीका उपास्थान और उसका फल	१२२४
२७७-गायत्रीके मुखविधानके लिये अर्थवाद	१२३७

विषय — पृष्ठ-संख्या

पञ्चदश ब्राह्मण

२७८-ज्ञानकर्मसमुच्चयकारीकी अन्तकालमें आदित्य और अग्निसे प्रार्थना १२३९

षष्ठ अध्याय

प्रथम ब्राह्मण

२७९-ज्येष्ठ-श्रेष्ठ दृष्टिसे प्राणोपासना १२४६
२८०-वसिष्ठादृष्टिसे वाक्‌की उपासना १२४८
२८१-प्रतिष्ठादृष्टिसे चक्षुकी उपासना १२४९
२८२-सम्पद्दृष्टिसे श्रोत्रकी उपासना १२५०
२८३-आयतनदृष्टिसे मनकी उपासना १२५१
२८४-प्रजापतिदृष्टिसे रेतस्‌की उपासना १२५२
२८५-अपनी श्रेष्ठताके लिये विवाद करते हुए वागादि प्राणोंका ब्रह्माके पास जाना और ब्रह्माका यह निर्णय करनेके लिये एक कसौटी बताना १२५३
२८६-अपनी उत्कृष्टताकी परीक्षाके लिये वाक्‌का उत्क्रमण और पुनः प्रवेश १२५४
२८७-चक्षुका उत्क्रमण और परीक्षामें असफल होकर पुनः प्रवेश १२५५
२८८-श्रोत्रका उत्क्रमण और परीक्षामें असफल होकर पुनः प्रवेश..... १२५६
२८९-मनका उत्क्रमण और परीक्षामें असफल होकर पुनः प्रवेश १२५६
२९०-रेतस्‌का उत्क्रमण और परीक्षामें असफल होकर पुनः प्रवेश १२५७
२९१-प्राणके उत्क्रमण करते ही अन्य इन्द्रियोंका विचलित हो जाना और उसकी श्रेष्ठता स्वीकार करना १२५८
२९२-वागादिकृत प्राणकी स्तुति और उसे अन्न तथा वस्त्र प्रदान १२६०

द्वितीय ब्राह्मण

२९३-प्रवाहणकी सभामें श्वेतकेतुका आना और प्रवाहणका उससे प्रश्न करना १२७१
२९४-प्रवाहणके पाँच प्रश्न और श्वेतकेतुका उन सभीके प्रति अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना १२७३
२९५-श्वेतकेतुका अपने पिताके पास आकर उलाहना देना १२७७
२९६-पिता आरुणिका उनके विषयमें अपनी अनभिज्ञता बताकर उसे शान्त करना और उनका उत्तर जाननेके लिये प्रवाहणके पास आना १२७९
२९७-आरुणिका प्रवाहणसे अपने पुत्रसे पूछी हुई बात कहनेकी प्रार्थना करना १२८१
२९८-प्रवाहणका उसे दैववर बताकर अन्य मानुषवर माँगनेके लिये कहना १२८२

विषय — पृष्ठ-संख्या

२९९-आरुणिका आग्रह और प्रवाहणकी स्वीकृतिसे आरुणिद्वारा वाणीमात्रसे उसका शिष्यत्व स्वीकार करना १२८२
३००-प्रवाहणकी क्षमा-प्रार्थना और विद्यादानके लिये तत्पर होना १२८४
३०१-चतुर्थ प्रश्नका उत्तर—पञ्चाग्निविद्या १२८६
१-द्युलोकाग्नि १२९२
२-पर्जन्याग्नि १२९४
३-इहलोकाग्नि १२९६
४-पुरुषाग्नि १२९७
५-योषाग्नि १२९९
३०२-प्रथम प्रश्नका उत्तर—अन्त्येष्टि संस्काररूप अन्तिम आहुति १३००
३०३-पञ्चम प्रश्नका उत्तर—देवयानमार्गका वर्णन १३०९
३०४-धूमयानमार्गका वर्णन तथा द्वितीय और तृतीय प्रश्नका उत्तर .....

तृतीय ब्राह्मण

३०५-श्रीमन्थकर्म और उसकी विधि १३१६
३०६-मन्थकर्मकी सामग्री और हवनविधि १३१६
३०७-हवनके मन्त्र १३२१
३०८-मन्थाभिमर्शका मन्त्र १३२३
३०९-मन्थको उठानेका मन्त्र १३२४
३१०-मन्थभक्षणकी विधि १३२४
३११-मन्थकर्मका वंश १३२७
३१२-मन्थकर्मकी सामग्रीका विवरण १३२९

चतुर्थ ब्राह्मण

३१३-संतानोत्पत्ति-विज्ञान अथवा पुत्रमन्थकर्म १३३०
३१४-नाम-कर्म १३५७

पञ्चम ब्राह्मण

३१५-समस्त प्रवचनका वंश १३५९